अखण्ड में याद देने

धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो।। टेक।।
अखण्ड में याद देने, ए जो बैन बजायो।
चित दे साथ को ले, आप में समायो।।
अखण्ड में याद देने, ए जो खेल बनायो।
बृज रास जागनी में, ए जो खेल खेलायो।।
झूठी जिमी में बैठाए के, देखाए सुख अपार।
कौन देवे सुख दूजा ऐसे, बिना इन भरतार।।
छक्यो साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग विकार।
परआतम अन्तस्करन उपज्यों, खेले संग आधार।।
दुलहे ने दिल हाल दे, खैंच लिए दिल सारे।
कहा कहूं सुख इन विध, जो किए हाल हमारे।।
चढ़ते चढ़ते रंग सनेह, बढ़यो प्रेम रस पूर।
बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर।।
महामत महामद चढ़ी, आयो धाम को अहमद।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद।।